AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR), 3.125 (IIFS) & 3.8(SJIF)
Vol (3), Issue (2), April-June 2026 ISSN: 3048-7951

आलोचना की परंपरा और स्त्री लेखन

रश्मि [1] ; डॉ॰ अनिल कुमार[2]

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.21534295
Review: 05/06/2026 Acceptance: 08/07/2026 Publication: 24/07/2026

सारांश: यह शोध-पत्र हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन, स्त्री अस्मिता और स्त्रीवादी आलोचना के विकास का ऐतिहासिक एवं वैचारिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। परंपरागत पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्रियों को लंबे समय तक वैचारिक रूप से निर्बल और साहित्यिक सृजन के क्षेत्र में गौण माना गया। इसके बावजूद मैत्रेयी, गार्गी, मीरा, अज्ञात हिन्दू महिला, बंग महिला, महादेवी वर्मा आदि रचनाकारों के माध्यम से स्त्री लेखन की एक सशक्त परंपरा विकसित हुई। आधुनिक काल में स्त्री लेखन ने न केवल साहित्य में स्त्री की उपस्थिति को स्थापित किया, बल्कि पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण, सामाजिक रूढ़ियों और स्त्री की अधीनता पर भी गंभीर प्रश्न उठाए। निर्मला जैन, अनामिका, प्रभा खेतान, रोहिणी अग्रवाल, मृणाल पांडे, मृदुला गर्ग और अन्य लेखिकाओं ने स्त्री आलोचना को वैचारिक आधार प्रदान किया। इस अध्ययन में स्त्री लेखन को केवल स्त्रियों द्वारा रचित साहित्य के रूप में नहीं, बल्कि स्त्री की अस्मिता, स्वतंत्रता, समानता और मानवीय अधिकारों की वैचारिक खोज के रूप में देखा गया है। लेख का निष्कर्ष है कि स्त्री लेखन हिन्दी साहित्य की एक स्वतंत्र, मौलिक और आवश्यक वैचारिक धारा है, जिसके माध्यम से स्त्री को 'अन्य' के रूप में देखने वाली पितृसत्तात्मक दृष्टि का प्रतिरोध करते हुए उसे पूर्ण मानव के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: स्त्री लेखन, स्त्री अस्मिता, स्त्रीवादी आलोचना, नारी चेतना, पितृसत्ता, स्त्री विमर्श, हिन्दी साहित्य, महिला लेखन, लैंगिक समानता, स्त्री मुक्ति।

परंपरा और स्त्री लेखन:

समाज और साहित्य में शुरूआती दौर से यहीं विचारधारा है कि "स्त्रियों वैचारिक रूप से निर्जन (शून्य) होती है। इसलिए उनका साहित्य में आलोचना निबंध व गद्य विधाओं में कोई हस्तक्षेप नहीं मिलता है। पूरातन काल से ही स्त्री की स्थिति परिवर्तनशील रही है प्रारंभ में स्त्री केवल परिवार का ही केन्द्र बिन्दु रही है । स्त्री को लेकर भारतीय साहित्य लेखन, दर्शन व धर्मशास्त्रों के चिन्तन-मनन की परपंरा अल्प रही है। जहाँ स्त्री को केवल भोग्या, अबला, रमणी आदि नामों के साथ केवल हेय दृष्टि से चित्रित किया गया है। इसका प्रमुख कारण यह था कि प्राचीन काल से ही सभी टीकाकार व रचनाकार केवल पुरुष थे, साहित्य में स्त्री को पुरूषवादी दृष्टि से देखा जाता था । उस युग में मैत्रेयी, गार्गी और अनुसूया जैसी कुछ स्त्रियाँ शास्त्रार्थ में निपुण थी जिनका साहित्य में स्थान नाममात्र था। मध्यकालीन युग में भी मीरा के काव्य छोड़कर अन्य

[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग. महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, इंडिया
[2] सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग. महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, इंडिया

कवियों ने स्त्री को पुरुषवादी दृष्टि से देखा है । दरअसल हिन्दी साहित्य में स्त्री अस्मिता का प्रथम स्वर मीरा के काव्य में सुनाई पड़ता है। मीराबाई के युग में सर्ग को आत्माभिव्यक्ति करने की आजादी नहीं थी वह केवल पुरूष की वैचारिक दृष्टि से स्त्री मानस को पढ़ने की लालसा व आवश्यकता मध्ययुग में कहाँ दिखाई नहीं दी ।

स्वतन्त्रता से पहले विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्त्री लेखन देखा जा सकता है। 1882 'सीमंतनी उपदेश' में 'अज्ञात हिंदू महिला' जो स्त्रियों की स्थिति को लेकर विचार कर चुकी है जिन्होंने अपने स्त्री लेखन से स्त्रियों की स्थिति को समाज में सुधारने का प्रयास किया था। 1920 से 1947 के अनेक शोध लेख जिनमें जगदीश चतुर्वेदी व सुधा सिंह अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'स्वाधीनता संग्राम हिन्दी प्रेस' और 'स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र' में उन्होंने कहा है कि 20 वी० शताब्दी में जिन आलोचनात्मक लेखो को दर्शाया गया है साहित्य में महाकाव्यात्मक पुसंवादी विधा हावी थी लेकिन इस महाकाव्यात्मक विधा को स्त्री लेखन अस्वीकार करता है इसी कारण स्त्री लेखन लघु रूपों में जैसे लघु कहानी, लघु निबंध मे रेखांकित हुआ हैं ।

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' ने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में 'आधुनिक काल' को गद्यकाल कहा है क्योंकि इस काल में अनेक गद्य विधाओं का आगमन हुआ है 'शुक्ल' जैसे प्रमुख एक आलोचक जिन्होंने हिन्दी आलोचना को एक नवीन दिशा दी थी श्शुक्लश् जैसे प्रसिद्ध आलोचक ने अपने आलोचनात्मक अध्ययन में 'बंग महिला' की 'दुलाई वाली' कहानी को अवश्य शामिल किया है। लेकिन अपने आलोचनात्मक इतिहास में स्त्री लेखिकाओं के योगदान को रेखांकित नहीं किया है। भले ही साहित्यिक क्षेत्र में स्त्री लेखन की वैचारिक दृष्टि न हो लेकिन पत्र पत्रिकाओं व अनेक लघु लेखो में स्त्री लेखन आरंभ से ही बना रहा है। छठे दशक में हिन्दी साहित्य में पुरुष लेखन ही था स्त्री लेखन को केवल मिथ्या दृष्टि से देखा जाता था फिर कुछ अंतराल के पश्चात् आठवें दशक में 'सीमोन द बउवार' स्त्री लेखन में परिलक्षित होती हैं।

''स्त्री की स्थिति अधीनता की है स्त्री सदियों से ठगी है यदि उसने कुछ स्वतन्त्रता हासिल की है तो बस उतनी ही जितनी पुरुष ने अपनी सुविधा के लिए उसे देनी चाही हैं।''1

प्रश्न यह उठता है कि आलोचना के क्षेत्र में स्त्री को अनुपस्थिति क्यों रही है? क्यों स्त्री लेखन को साहित्य की दृष्टि से नहीं देखा जाता है? वो इसलिए क्योंकि स्त्री लेखन को स्त्री दृष्टि से लिखा जाना योग्य नहीं समझा जाता हैं। जिसके कारण शुरूवाती दौर में स्त्री लेखन की कुछ कृतियाँ उपेक्षित होती रही है।

जहाँ तक देखा जाए स्त्री रचनाकारों ने आलोचना व निबंध को अलग-अलग करके नहीं लिखा है। 'प्रो० निर्मला जैन' जो हिन्दी की पहली आलोचक मानी जाती है। जिन्होंने अपनी पुस्तक 'हिन्दी आलोचना का दूसरा पाठ', 'कथा समय के तीन हमसफर' जिसमें तीन महिलाओं (मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती) के आधार स्त्री प्रश्नों को उठाया है। जो पुरुष रचनाकारों से मौलिक दृष्टिगत है। इसी दौर में अन्य स्त्री, आलोचक भी सक्रिय रहे हैं। जैसे 'पदमावती शबनम' जिन्होंने मीरा के जीवन को साहित्यिक आधार बनाकर लिखा है। आजादी के बाद आलोचना के क्षेत्र में महादेवी वर्मा के निबंध 'श्रृंखला की कड़िया' से स्त्री लेखन का आरंभ माना जाता है। जिन्होंने पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की दिशा व दशा का प्रश्न उठाया है। 'डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी' ने 'हिन्दी साहित्य और संवेदना के विकास' में 'महादेवी वर्मा' के निबंधो को आलोचनात्मक रूप में लिखा है।

दरअसल स्त्री लेखन को हर दशक में स्त्री लेखिकाओं ने नवीन दृष्टि के साथ देखने का प्रयास किया है। उन्होंने 'नारी चेतना' के नवीन बिन्दुओं को रेखांकित किया है। हिन्दी साहित्य में सातवें - आठवें दशक की स्त्री कथाकारों में 'कृष्णा

सोबती' से लेकर 'शिवानी' जैसी वरिष्ठ लेखिकाओं ने स्त्री दृष्टि का गहनता से अध्ययन किया है, ताकि स्त्री लेखन की एक नवीन छवि का हिन्दी साहित्य में आगमन हो सके।

"साहित्य के क्षेत्र में स्त्रियों का आना अत्यन्त आवश्यक है स्त्रियों के सहयोग के बिना मानव साहित्य सम्पूर्ण नहीं हो सकता है"2

1975 ई० "अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के पश्चात् स्त्री लेखन में 'स्त्री' व 'दलित' विमर्श" की आलोचना पीढ़ी सक्रिय रूप से विकसित हुई जिन्होंने न केवल परंपरागत आलोचना के बिन्दूओं पर प्रश्न लगाया। बल्कि आलोचना के क्षेत्र में नये सिद्धांतो की स्थापना भी होने लगी ।

'डॉ० ज्योति किरण' के शब्दों में इस समाज में जब स्त्रियाँ अपनी समझ और काबलियत जाहिर करती है तब वह कुल्च्छलनी मानी जाती है जब वह खुद विवेक से काम करती है तब भी मर्यादाहीन समझी जाती हैं"3 स्त्री लेखन को मजबूत बनाने में 'अनामिका', 'अर्चना वर्मा', 'मृदुला गर्ग', 'प्रभा खेतान', 'रोहिणी अग्रवाल', 'मृणाल पाँडे' आदि अनेक लेखिकाओं को वैचारिक रूप से महत्वपूर्ण योगदान है। 'अनामिका' ने 'स्त्रीत्व के मान चित्र' में उन्होंने स्त्रीवादी पक्ष को उजागर किया है। उन्होंने अपना स्त्री लेखन भारतीय संदर्भो के आधार पर रेखांकित किया है। अनामिका ने स्त्री जीवन के छोटे-बड़े अन्तर्विरोधों को चित्रित किया है। उनका स्त्री आन्दोलन प्रतिशोध से पीड़ित नहीं है और न ही स्त्रियां पुरुषों का स्थान पाना चाहती है। इसी संदर्भ में वे कहती है "स्त्री और पुरुष की लड़ाई का व्याकरण सांमतो और आसामियों, पुंजीपतियों और मजदूरों, शोषक व शोषितो के बीच की जंग से अलग व्याकरण है स्त्री और पुरुष के बीच की लड़ाई दो वर्गों, दो नस्लों, दो जातियों के बीच की लड़ाइयों से तुलनीय नहीं! सम्पन्न और विपन्न, ऊँच और नीच, शासक और शोषित, गोरे और काले के बीच तो जंग छिड़ी है उनमें प्रतिपक्षियों के हित निकाय अलग-अलग है। लेकिन स्त्री और पुरुष के बीच की लड़ाई के हित-निकाय अलग-अलग नहीं होती, दोनों का हित-निकाय एक ही होता है।"4

'अनामिका' की आलोचनात्मक अध्ययन का प्रमुख विषय 'स्त्री भाषा' है स्त्री लेखन को आलोचनात्मक दृष्टि के आधार पर सक्रिय रूप से संगठित करने वाली प्रमुख कथा लोचक 'रोहिणी अग्रवाल' जी है, उन्होंने स्त्री लेखन के विषय में अनेक आलोचनात्मक पुस्तकों को लिखा है स्त्री लेखन पर प्रकाशित 2011 में 'स्त्री लेखनः स्वप्न व संकल्प' है जो 13 अध्यायों में विभिक्त है जिसमें स्त्री दृष्टि से स्त्री लेखन को दर्शाया गया है रोहिणी अग्रवाल का मानना है कि वास्तव में स्त्री लेखन स्त्री को मानव रूप में शिनाख्त करने की वैचारिक लड़ाई है। जहाँ वह पुसंवादी को पछाड़ कर अपनी अस्मिता को स्थापित करना चाहती हैं और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को पूर्ननिरिक्षण कर मानवीय समानता में विकल्प को खोजना है।

रोहिणी जी का स्त्री लेखन स्त्री की आशाओं व इच्छाओं का दर्पण है उन्होंने 50 वर्षों के बीच मे लिखी गई कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। रोहिणी अग्रवाल के कथालोचक में बारे में 'अरुण होता' ने कहा है कि "रोहिणी अग्रवाल की कथा लोचन में सिद्धान्तो की शुष्कता नहीं है वे अपने सृजनात्मक विवेक और व्यवहारिक उदाहरणों से आलोचना को सवांदधर्मी बनाती है।"5

स्त्री लेखन पुसंवादी ताकत से अपनी हीन स्थिति को लेकर कुठित हिन्दी साहित्य में इतिहास में 'रसीदा जहाँ' (दिल्ली की सैर), 'अज्ञात हिन्दू महिला' (सीमंतनी उपदेश) 'रुकैया सखावत हुसैन' की कहानी (सुल्ताना का सपना) व इसके अतिरिक्त अन्य लेखिकाओं मे स्त्री लेखन को रेखांकित किया है ।

'रोहिणी अग्रवाल' के अनुसार - स्त्री लेखन का मूलाधार जो अपनी मूल प्रस्थापना और अंतिम लक्ष्य में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का शिनाख्त कर साहित्य और समाज शास्त्र दोनों जगह का स्थान बनाता है"6

इसके अतिरिक्त विमर्शवादी आलोचना में 'प्रभा खेतान' की प्रमुख पुस्तक 'उपनिवेश में स्त्री' जो स्त्री मुक्ति कामना की दस वार्ताय है ये वार्ताए कारखानों में कामकाजी स्त्री, प्रेम की कलह में उलझी जिदंगी, मानवीय अस्मिता की खोज में जुटी स्त्री की यातनाओं व कुण्ठा से संबंधित है कि किस तरह से स्त्री की आजादी के आन्दोलन को अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ता है।

"हिंदू परंपरावादियों की नजर में नारीवाद, अनैतिक आचरण का पर्याय है। जमीन से जुड़े आन्दोलन कर्ताओं के अनुसार विशेषकर पूर्वी युरोप के वामपंथियों के अनुसार नारीवाद मात्र के बुर्जुआ का विचार है। स्त्री अधिकारों की प्रबलता समर्थको के एक हिस्से में भी नारीवाद को खारिज कर दिया है।"7

इस तरह हम देखे तो पुरुष का दृष्टिकोण स्त्री के प्रति शायद ही कभी सद्भावना व उदारता का भाव होगा क्योंकि तमाम सद्भावना के बाद साहित्य क्षेत्र के निर्णयों का अधिकार मूल रूप से पुरूषों के पास है और शोध कर्ता और आलोचक ने जितनी गंभीरता व लगन से पुरूष लेखन किया गया है उतना गंभीर अध्ययन स्त्री लेखन के लिए कदापि नहीं करते। क्योंकि उनकी नजर में महिला लेखन जड़ नीरस, भावुक व कुण्ठा भरा है।

इस संदर्भ में 'नासिरा शर्मा' कहती है कि हो सकता है साहित्य को महिला पुरूष लेखन में बाटँना बहुतों को पसन्द भी आता हो परन्तु जब इन महिलाओं के लेखन की बात उठती है तो महिलाओं में सबसे आगे कहलाना भी उन्हें बुरा नहीं लगता और न ही महिलाओं के लेखन पर होने वाले सेमिनारों की बागडोर संभालने मुख्य अतिथि बनने में उन्हें झिझक महसूस होती है।"8 19वी० सदी में हुए जिनमें स्त्री लेखक के सुधार पर स्त्रियों की दशा में सुधार लाने का प्रयास किया गया था।

फिर आद्यंत काल में बीसवी सदी में स्त्रियों के मुद्दो पर अनेक नवीन पत्र-पत्रिकाएँ मुखर होने लगी। अगर हम हिन्दी साहित्य के लेखन को वास्तविक वैचारिकता का पक्ष देखे तो पुरुष रचनाकारों का स्वरूप मौजूद है क्योंकि शिक्षा से लेकर हर सामाजिक राजनीतिक कार्यों में मर्दवादी मानसिकता शासन कर रही है।

क्या अब भी साहित्य में स्त्री लेखन केवल काल्पनिक रूप में निर्मित है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में षड्यंत्रों के प्रति महादेवी वर्माश् का रोष 'हिंदू स्त्री का पत्नीत्व' में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पितृसत्ता आरंभ से ही समाज देश परिवार सभी जगह पुरूषों का ही आधिपत्य है। वर्ग, जाति, समाज तथा सम्प्रदाय हर क्षेत्र में पुरूषों के पास एक अनमोल चीज है। वह है स्वतन्त्रता। इसके अलावा यदि हम स्त्री की संरचना देखे तो उसकी देश से लेकर शिक्षा व इच्छा तक सभी की व्यवस्था पुरूष दृष्टि के आधार पर तय की जाती है। वर्तमान में भी स्त्री को स्त्री के रूप में तथा पुरुष को पुरुष के रूप में विकसित नही कर पाई है। इस संदर्भ में 'सीमोन द बउवार' ने 'स्त्री उपेक्षिता' में लिखा है कि 'मातृसत्तात्मक व्यवस्था पितृसत्तामक समाज में संक्रमण में हम फिर भी स्त्री को कुछ सुविधापूर्ण स्थिति में पाते है।"9

स्त्री लेखन की मूल समस्या यह है कि स्त्री को पुरूष की विचारधारा से मुक्त नहीं किया गया है। पुसंवादी दृष्टि से उसे हमेशा श्अन्यश् के रूप में देखा गया है और इसलिए स्त्री लेखन जब स्त्री दृष्टि से लिखा जाता हैं तो उसे शंक की दृष्टि से देखा जाता है। चाहे वह कितना भी मौलिक क्यों न हो।

प्रसिद्ध लेखिका 'हेलिनी सिकसाउस' ने लिखा है कि स्त्री के विषय की कोई सीमा नहीं होती। जिस तरह स्त्री के शरीर की अनंत सभावनाएँ है। वैसे ही स्त्री विषय और विमर्श की कोई सीमा नहीं है वह अनंत रूपा है, उसके पास अनंत शक्ति है अनंत संभावनाएँ है"10 स्त्री लेखन चाहे किसी विषय पर हो या किसी समस्या को लेकर वह साहित्य का विशेष अंग है। स्त्री लेखिकाएँ जिन विषयों पर चर्चा करती रही है वे सब साहित्य की कोटी में ही आते है। कहा भी गया है कि "पुरूष को शिक्षित करो तो एक जन शिक्षित होता है। इसे हम इस तरह भी ले सकते है कि स्त्री का सही तरह से मुक्ति दो, तो पूरा वंश मुक्त होता है।"11

इसलिए वर्तमान में यह आवश्यक हो गया है कि पुरुष आलोचना के स्थापित आदर्शों के संदर्भ में स्त्री प्रश्न उठाए। स्त्री आलोचना की एक अलग-अलग भूमिका तैयार करना आवश्यक है, ताकि स्त्री लेखन की एक स्वच्छ परंपरा का निर्माण हो। स्त्री लेखन उसकी भिन्नता व वैचारिका का लेखन है स्त्री लेखन में कई तरह की संभावनाए व विकल्प होते है। स्त्री लेखन के आधार पर स्त्री समाज में अपना स्थान खोजने का प्रयास कर सकती है।

दरअसल वर्तमान में हमें स्त्री लेखन को एक मौलिक दृष्टि के साथ समझना होगा। क्योंकि स्त्री लेखन का उद्देश्य स्त्री को विभिन्न भूमिकाओं से मानव समाज को परिचित कराना है। जिससे आलोचनात्मक दृष्टि से स्त्री लेखन को गंभीर रूप से लिया जा सके। इन्हीं नये आयामों से समाज की परपंरा व रूढ़ियों को तोड़ कर स्त्री को मानवीय रूप में समझना ही स्त्री लेखन है।

संदर्भ ग्रन्थ:-

आजकल: मार्च 2013, पृष्ठ 24
डॉ० आशा गुप्ता, नवम् दशक की हिन्दी महिला कथाकारों की नारी चेतना, कान्त पब्लिकेशन्स 124 चन्द्रलोक एम्क्वेलव दिल्ली, पृ० 25
पंचशील, शोध समीक्षा, पृ० 61
स्त्रीत्व का मानचित्र, अनामिका, पृ० 10
रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन स्वप्न व संकल्प, राजकमल प्रकाशन, पृ० 6
रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन स्वप्न व संकल्प, राजकमल प्रकाशन, पृ० 44
प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, पृ० 10
प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, पृ० 44
लिंगभेद, पितृसत्ता और स्त्रीवाद, जगदीश चतुर्वेदी, सुधा सिंह, एकैडमिक पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ० 64
लिंगभेद, पितृसत्ता और स्त्रीवाद, जगदीश चतुर्वेदी, सुधा सिंह एकैडमिक पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ० 85
मृणाल पांडे, देह की राजनीतिक से देश की राजनीतिक तक, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ० 21